शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

भारतीय शास्त्रीय यथार्थवादी चित्रकार डॉ0 एस.एम.पंडित

प्राप्तिः 28.02.2025
स्वीकृतः 18.03.2025

6

रजत चौहान
शोध छात्र
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉजी देहरादून, उत्तराखंड

डॉ0 ओमप्रकाश मिश्रा
प्राधानाचार्य (ललित कला विभागाध्यक्ष)
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉजी देहरादून, उत्तराखंड
ईमेलः*mishraop200@gmail.com*

सारांश

19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत में उत्पन्न हुई कैलेंडर कला जिसमें बड़े पैमाने पर उत्पादित ''प्रतीक और छवियाँ'' होती हैं, जो आमतौर पर देवी–देवताओं की होती हैं और भारतीय सार्वजनिक स्थानों पर सर्वव्यापी होती हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं से जुड़ी छवियों वाले कैलेंडर जो भारत की दृश्य संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा है, डिजिटल युग में भी फल–फूल रहे हैं। त्योहारों पर हम किस तरह बाजार से इन कैलेंडरों को खरीद कर लाते और अपने घरों की दीवारों को सजाते हैं जो भारतीय नागरिकों के जीवन का एक अलग ही अनुभव है। ये कैलेंडर विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं, जिसमें परिदृश्य, राजनीतिक व्यक्तियों और नायक–नायिकों के व्यक्तिचित्र, हिंदु देवी–देवताओं व पौराणिक कथाओं पर आधारित चित्र आदि। कैलेंडर कला में देवी–देवताओं को चित्रित करना एक प्रमुख विषय था।

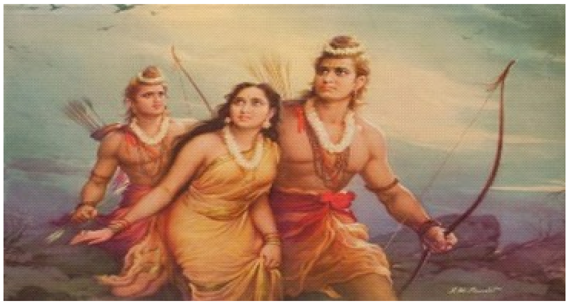

भारत में इसकी मूल रूप से शुरुआत भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा ने की, जिन्हें कैलेंडर कला के जनक के रूप में भी जाना जाता है। भारत में इन्होंने ही सर्वप्रथम 1894 में एक लिथोग्राफिक प्रेस की शुरुआत करके कैलेंडर कला को लोकप्रिय बनाया और इसे आम भारतीय नागरिकों तक पहुंचाया। राजा रवि वर्मा हिंदू देवी–देवताओं को कैनवास पर चेहरे देने वाले पहले भारतीय कलाकार थे। तब तक उन्हें केवल मंदिरों में मूर्तियों के रूप में दर्शाया जाता था। इनकी कई प्रसिद्ध पेंटिंग्स जैसे खिले हुए कमल पर बैठी देवी लक्ष्मी, वीणा बजाती हुई देवी सरस्वती, आदि में हिंदू देवी–देवताओं का रूपांकन है। 1940 और 60 के दशक में डॉ0 एस.एम.पंडित, के. माधवन, रघुवीर मूलगांवकर, बि.जी. शर्मा जैसे

कलाकारों ने कैलेंडर कला युग में अपनी छाप छोड़ी। राजा रवि वर्मा के बाद डॉ0 एस.एम. पंडित द्वारा बनाए गए हिंदू देवी–देवताओं के चित्र आज भी लोकप्रिय हैं। इस शोध पत्र में हम डॉ0 एस.एम.पंडित के बारे में पढ़ेंगे और कैलेंडर कला में उनके योगदान को जानेंगे।

मुख्य बिंदु

डॉ0 पंडित, कैलेंडर, देवी–देवताओं, भारतीय, कला, पौराणिक, नायक–नायिकाओं, चित्र, चित्रित।

प्रस्तावना

शास्त्रीय यथार्थवाद, जो कि पारंपरिक कला के सिद्धांतों और उत्पादन को फिर से लाने का एक आंदोलन था। जिसके अंतर्गत कलाकारों का मकसद समकालीन विषयों को पारंपरिक शिल्प कौशल से चित्रित करना था। भारत में अंग्रेजों के अतिक्रमण के दौरान भारतीय कलाकारों को यूरोपीय शैली में चित्रण करने के लिए आदेश दिया गया। जिसके कारणवश भारत की पारंपरिक कला शैली का अस्तित्व खत्म होने लगा। तब राजा रवि वर्मा उस समय के भारतीय कलाकारों में से एक हुए जिन्होंने यूरोपीय कला को भारतीय स्वरूप प्रदान किया और भारत की पारंपरिक कला शैली का आविर्भाव हुआ। राजा रवि वर्मा पहले शास्त्रीय यथार्थवादी चित्रकार हुए जिन्होंने भारत की परंपरा को दोबारा से संजोया ओर विश्व भर को भारत की शास्त्रीय कला व पारंपरिक विषयों से अवगत कराया। जिसके लिए उन्होंने हिंदू धार्मिक पुराणों, ग्रंथों, पौराणिक कथाओं और रामायण, महाभारत जैसे शास्त्रीय और पारंपरिक विषयों का यथार्थ स्वरूप चित्रांकन किया। इन्होंने हिंदू देवी–देवताओं को सर्वप्रथम कैनवास के ऊपर एक स्वरूप प्रदान किया। राजा रवि वर्मा के बाद डॉ0 पंडित उन दिग्गज कलाकारों में से एक है जिनकी कृतियों में शास्त्रीयता और भारतीय परंपरा की झलक देखने को मिलती है। इनके चित्रों को भी वही सम्मान, प्रशंसा, और लोकप्रियता मिली जो राजा रवि वर्मा द्वारा बनाए गए चित्रों को मिली। इन्होंने भी हिंदू देवी–देवताओं को चित्रित किया है। धार्मिक होने के साथ–साथ डॉ0 पंडित फिल्मी दुनिया से भी काफी प्रभावित थे जिसका प्रभाव इनके चित्रों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

डॉ0 सम्बानन्द मोनप्पा पंडित या डॉ0 एस. एम. पंडित का जन्म 25मार्च 1916 को कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में हुआ। अपने जीवन के शुरुआती दौर में ही उनके माता–पिता को ज्ञात हो गया कि उनका पुत्र एक विशिष्ट प्रतिभा के साथ पैदा हुआ है और उन्होंने पंडित को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग दिया। केवल 10 साल की उम्र में ही उन्होंने पंडित को श्री शंकर राव अलंधर के अधीन अध्ययन कराया ताकि उनके बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाया जा सके। श्री शंकर राव अलंधर जो स्वयं सर जेजे स्कूल का आर्ट के छात्र रह चुके थे। इन्होंने पंडित को न केवल शिक्षण प्रदान किया बल्कि पंडित की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण आगे की पढ़ाई के लिए भी काफी मदद की।

पंडित ने 14वर्ष की आयु में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट से डिप्लोमा प्राप्त किया। एस.एम.पंडित के पिता की आर्थिक हालत बहुत खराब थी, इसलिए उनकी चाची ने अपनी सोने की चूड़ियाँ बेचकर 50 रुपये हासिल किए और पंडित को आगे की पढ़ाई और करियर के लिए बॉम्बे जाने के लिए पैसे दिए और 1935 में मुंबई आ गए और नूतन कला मंदिर में शामिल हुए जहां जी.एस. दंडवतीमठ के मार्गदर्शन में इन्होंने आगे की पढ़ाई शुरू की।

बाद में इन्होंने सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स से डिप्लोमा किया जहां श्री के.बी. चूड़ेकर जैसे प्रसिद्ध शिक्षकों ने इन्हें पढ़ाया। यहां कलाकार एम.वी. धुरंधर प्रधानाध्यापक थे, जो भारतीय पौराणिक कथाओं, इतिहास और शास्त्रीय साहित्य के दृश्यों को चित्रित करने के लिए प्राकृतिक तकनीकों के उपयोग के लिए जाने जाते हैं।

करियर की शुरुआत

एस.एम.पंडित ने जल्द ही कैलेंडर और फिल्म कला के साथ–साथ विज्ञापन की व्यावसायिक दुनिया में भी अपनी पहचान बनाई। डॉ0 पंडित ने 1938 में बॉम्बे के मेटो थियेटर के लिए एमजीएम शोकॉर्ड पेंट करके अपने व्यावसायिक करियर की शुरुआत की। इन्होंने कुछ अन्य कलाकारों के साथ मिलकर मुंबई में ''यंग आर्टिस्टस कमर्शियल आर्ट स्टूडियो'' की स्थापना की। इस अवधि के दौरान इन्होंने फिल्मी पोस्टर्स बनाने के लिए कपड़े पर तेल रंग के ऊपर जल्दी सूखने वाल गौचे के इस्तेमाल का भी अविष्कार किया।

विज्ञापन और प्रकाशन की व्यावसायिक दुनिया से उन्हें ढेर सारे काम मिले। अपने अद्वितीय कौशल और सुंदर आकृति रचना के प्रति प्रेम के साथ–साथ पोस्टर रंगों के नए माध्यम में उनकी महारत के साथ, जिसे वे भारत में सबसे पहले सुर्खियों में लाने वाले व्यक्ति थे, उन्होंने कला जगत को दिखाया कि इसका उपयोग पेंटिंग के उद्देश्य से भी किया जा सकता है। पोस्टर रंग माध्यम में उनकी रंग मिश्रण तकनीक, यह अपारदर्शी है, और इसमें पादर्शिता लाने के लिए उन्हें प्रसिद्धि मिली।

आगे चलकर इन्होंने यह स्टूडियो छोड़ा और रतन बत्रा की एडवरटाइजिंग एजेंसी में शामिल हुए। इस समय के दौरान ''फिल्म इंडिया'' नामक पत्रिका के संपादक बाबूराव पटेल से भी इन्होंने मुलाकात की और फिल्म इंडिया के कवर पेजो को डिजाइन और चित्रित करना शुरू किया, जो आज भी लोकप्रिय है।

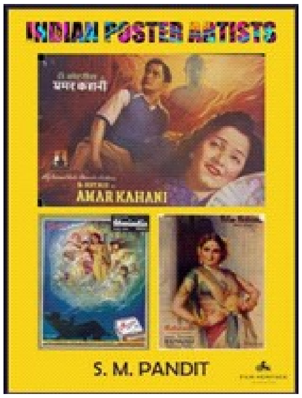

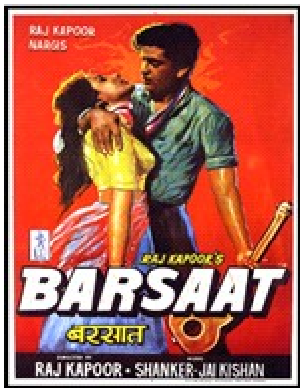

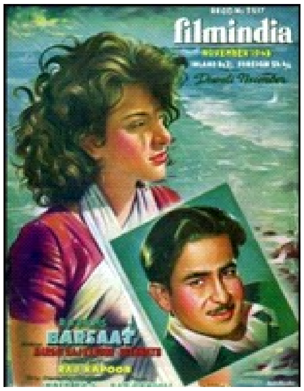

1944 तक मुंबई के शिवाजी पार्क में ''स्टूडियो एस.एम.पंडित'' नाम से इन्होंने अपने एक स्टूडियो की शुरुआत की। यहां इन्होंने प्रभात स्टूडियो, राज कपूर, सोहराब मोदी सहित कई अन्य लोगों के लिए फिल्म प्रचार का निर्माण किया। डॉक्टर कोटनीस की अमर कहानी 1946, बरसात 1949 आदि जैसी फिल्मों के लिए पोस्टर्स और अन्य प्रचार सामग्री डिजाइन की।

अपने शुरुआती दिनों में डॉ0 पंडित माइकल एंजेलो, पीटर पॉल रूबेंस, रेम्ब्रांट जैसे पश्चिमी कलाकारों से पूरी तरह प्रभावित थे और भारत में वे राजा रवि वर्मा के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। डॉ0 पंडित ही वास्तव में राजा रवि वर्मा के बाद भारतीय विषय–वस्तु के साथ यथार्थवाद को आगे बढ़ाने वाले व्यक्ति थे।

1950 के दशक में बॉम्बे फाइन आर्ट प्रेस और नागपुर के शिवराज फाइन आर्ट प्रेस के आर्डर पर पौराणिक विषयों पर पेंटिंग करना शुरू किया। उनके चित्रों में राजा रवि वर्मा और एम.वी. धुरंधर का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। डॉ0 पंडित को राजा रवि वर्मा से चित्रकला की प्रकृतिवादी या यथार्थवादी शैली विरासत में मिली।

इन्होंने मुलगांवकर के साथ मिलकर राजा रवि वर्मा द्वारा शुरू की गई धार्मिक और पौराणिक छवियां के नए रूपों को बाजार की मांगों के अनुरूप, अपने समय की तकनीकी नवीनताओं के अधीन करके एक और कदम आगे बढ़ाया। विशेष रूप से फिल्म और कैलेंडर कला के संबंध में।

राजा रवि वर्मा द्वारा शुरु की गई देवी–देवताओं की छवियां में एक निश्चित मात्रा में स्थिरता और निरंतर की व्याख्या कर सकते हैं और बाद में सी कोंडिया राजू, नाथद्वारा कलाकारों और आगे चलकर डॉ0 एस.एम.पंडित और शैली के अन्य समकालीन कलाकारों के कैलेंडर और पोस्टर कला में तेजी से बढ़ते बाजारों द्वारा जोर दिया गया। कैलेंडर कला युग की कई हिंदू धार्मिक छवियों को बाद में वर्तमान हिंदुत्व प्रचार द्वारा पूर्णतः या आंशिक रूप से अपनाया और नवप्रवर्तित किया गया है।

कला में योगदान

डॉ0 पंडित ने अपने जीवनकाल के दौरान भारतीय कला स्थान में काफी योगदान दिया। डॉ0 पंडित ने पोस्टर रंगों को भारत में कलाकारों के लिए उपयुक्त माध्यम के रूप में भी पेश किया था और तेल रंग के बजाए गोचे रंग की नई तकनीक को खोजा था जो कि कपड़े पर प्रयोग की जा सके और तेल रंग से मुकाबले जल्दी सुख सके। डॉ0 पंडित अपने समय के सबसे वांछनीय और मांग कलाकार में से एक थे और यथार्थवाद के प्रेमियों के बीच और भी प्रसिद्ध थे। इन्होंने समकालीन नेट–परंपरावादी बंगाल पुनर्जागरण और अन्य भारतीय आधुनिक कला आंदोलनों में भाग लिया। एस.एम.पंडित के चित्रों में फिल्मी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। देवी–देवताओं के चित्रों में इन्होंने देवताओं को फिल्मों जैसे मांसपेशियां और मस्क्युलर शरीर बनाया है और फिल्मों की नायिकाओं जैसे देवियों को चित्रित किया है। इन्होंने प्रकृति को दर्शाने के लिए डिज्नी जैस फूल और जानवरों को चित्रित किया है। जो कि इन्हें ओर इनके बनाए गए चित्रों को राजा रवि वर्मा जैसे कलाकारों से थोड़ा अलग बनाता है।

विषय वस्तु

डॉ0 पंडित ने जीवनभर यथार्थवादी पात्रों को चित्रित किया था और ज्यादातर उनके काम कहानियों, कविताओं, गाथाओं का चित्रण थे, जिनका उल्लेख भारतीय पवित्र पुस्तकों जैसे रामायण, महाभारत, पुराणों और कई अन्य में किया गया है। पौराणिक और धार्मिक विषयों पर पंडित का काम एक बेहतरीन कृति है।

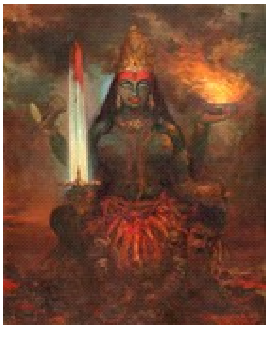

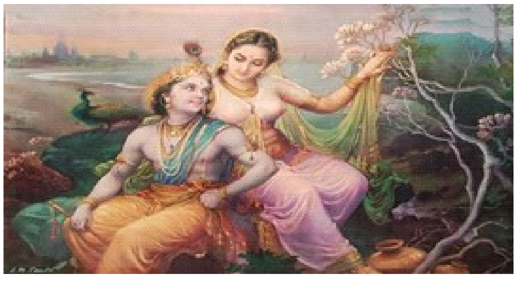

दैवीय चरित्रों को चित्रित करने की उनकी शैली दर्शकों और कला प्रेमियों को शांति और सुकून का सुखद एहसास कराती है। इन्होंने राधा कृष्ण, नल दमयंती, विश्वामित्र मेनका आदि जैसे रोमांटिक पात्रों के साथ–साथ हिंदी सिनेमा के नायक नायिकाओं का भी चित्रण किया है। इन्होंने नायकों और नायिकाओं के चित्रण में कलात्मक कौशल और फिल्मी ग्लैमर का एक दुर्लभ मिश्रण डाला। इन्होंने हर तकनीक में कार्य किया किंतु मुख्य रूप से पोस्टर रंग के माध्यम से चित्रों को चित्रित किया है।

डॉ0 पंडित की उत्कृष्ट कृतियों में कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानंद का आत्मकद चित्र शामिल है। इन्होंने कई अन्य प्रमुख व्यक्तियों और नेताओं के चित्र भी बनाए हैं जिनमें महात्मा गांधी का चित्र भी शामिल है जो अब मुंबई के न्यू काउंसिल हॉल में रखा है।

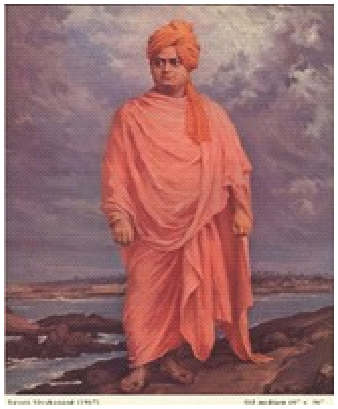

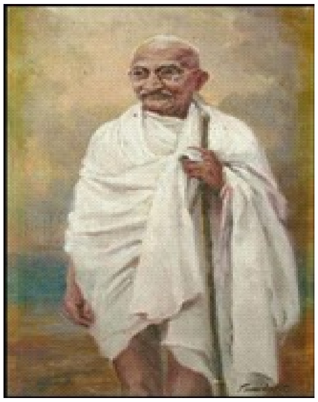

प्रसिद्धि व सम्मान

डॉ0 एस.एम.पंडित को पहचान और सम्मान भरपूर मात्रा में मिली। उनकी प्रसिद्धि के कारण उन्हें भारत का टूलूज लॉट्रेक भी कहा जाता था। वर्तमान और आने वाली कई पीढ़ियाँ उनकी यथार्थवादी शैली से आकर्षित हुईं और बाद में उन्होंने उनकी शैली को अपना भी लिया।

उन्हें अपने कवर डिजाइन के लिए 1944 में टोरोंटो में अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में पदक से सम्मानित किया गया था। 1978 में रवि शंकर हॉल और लंदन मैनचेस्टर में भारतीय उच्चायोग में उनके पौराणिक और थिएटर चित्रों की प्रदर्शनी ने उन्हें लोकप्रिय और आलोचनात्मक प्रशंसा दिलाई। इसी वर्ष में ''रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स'' लंदन (एफ.आर.एस.ए) का फैलो भी चुना गया।

उनकी पेंटिंग्स, पोस्टर्स और प्रिंट्स कई महत्वपूर्ण संग्रहों में शामिल है जिनमें न्यूयॉर्क में रोमन आर्ट गैलरी, सिरेक्यूज यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी में एच. डेनियल स्मिथ पोस्टर आर्काइव और भारत और विदेशों में कई अन्य निजी और सार्वजनिक संग्रह शामिल है। डॉ0 पंडित मुंबई के कमर्शियल आर्टिस्ट गढ़ के संस्थापक सदस्य थे। लंदन में रॉयल अकादमी का स्वर्ण पदक मिला।

1983 में राज्य ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कार और 1984 में राज्य उत्सव पुरस्कार भी दिया गया। 1986 में कर्नाटक के गुलबर्ग विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि दी गई थी।

निष्कर्ष

कर्नाटक में जन्मे डॉ0 एस.एम.पंडित जिन्होंने भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने का कार्य किया। उनके जीवन की हर कड़ी आगे बढ़ते कलाकारों के लिए एक सिख या प्रेरणा के स्त्रोत है। आर्थिक स्थिति में कठिनाइयां होने के बावजूद भी उनके परिवार जनों और उनके शिक्षक ने कैसे डॉ0 पंडित को उनके लक्ष्य को पूरा करने में समर्थन दिया।

उन्होंने भारतीय संस्कृति से जुड़ी कथाओं, पुराणों, कविताओं, रामायण, महाभारत आदि सभी के विषयों को यथार्थ स्वरूप चित्रित किया है। राधा–कृष्ण, नल–दमयंती, विश्वामित्र–मेनका आदि के साथ–साथ सिनेमा के नायक–नायिकाओं का भी यथार्थपूर्ण अंकन किया है। कैलेंडर काल में नित नवीन प्रयोग करने का श्रेय भी नहीं को जाता है, जिसमें देवी–देवताओं के चित्रण के साथ–साथ फिल्मी नायक–नायिकाओं को भी चित्रित किया गया है। डॉ0 एस.एम. पंडित हिंदू पौराणिक कथाओं के विषयों के यथार्थवादी चित्रण के लिए भारतीय कैलेंडर उद्योग में व्यापक रूप से प्रसिद्ध है। हालांकि वे भारतीय सिनेमा से प्रेरित थे। चित्रों में अपने विषय को सुंदर, मांसल, वीर पुरुषों और कामुक रूप से सुंदर कामुक महिलाओं के रूप में दर्शाया है।

जब भी वे पेंटिंग करने के लिए उद्देश्यपूर्ण संकल्प से प्रेरित होते थे, तो परिणाम एक पेंटिंग नहीं बल्कि एक भेंट होती थी। वे एक चित्रकार और विनम्र भक्त थे, जो इस बात से बेखबर थे कि उन्होंने क्या हासिल किया है। जब उन्होंने पोर्ट्रेट और विशाल काल्पनिक पौराणिक चित्र बनाए, तो उन्होंने अपने काम पर कब्जा कर लिया। आश्चर्यजनक रूप से जब उन्होंने अपनी आत्मा के निर्देशानुसार काम करना शुरू किया, तो वे विषय के वशीभूत हो गए। भारत में सामूहिक अचेतन की इच्छा रामायण, महाभारत और प्राचीन भारतीय साहित्य और कविता के आदर्शों से गहराई से जुड़ी हुई है।

डॉ0 पंडित को सामूहिक रूप से अपने समय के सबसे प्रतिभाशाली कलाकारों में से एक माना जाता था। उसके बाद कई महत्वाकांक्षी कलाकारों ने उनका अनुसरण किया और समय के साथ उनके अनुयायियों की संख्या में वृद्धि हुई, यहाँ तक कि वर्तमान समय में भी उनके बहुत से अनुयायी हैं।

संदर्भ

1. पंडित सम्बानन्द मोनप्पा, 1995, एस.एम. पंडित, कृष्णराज सम्बानन्द पंडित।
2. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki S._M._Pandit?_x_tr_sl=en&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=sc
3. https://www.indiaart.com/old-masters/S-M-Pandit/Info-of-S-M-Pandit.asp
4. https://www.facebook.com/profile.php?id=100050333686697&mibextid=ZbWKwL